संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक-१२ ● १६ मार्च २०१६ फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६५ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

10 मार्च रविवार को सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 लखनऊ की अन्तरंग सभा की बैठक सम्पन्न

- गुरूकुल वृन्दावन मथुरा में बनेगा ''राजामहेन्द्र प्रताप'' शहीद बाल गुरूकुल विद्यामन्दिर - डॉ. धीरज सिंह, सभा प्रधान
- 18, 19, 20 अक्टूबर 2019 को काशी में होगा विशाल आर्य महासम्मेलन
- 7, 8, 9, 10 जून 2019 को होगा रामगढ़तल्ला में विशाल योग शिविर-धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

लखनऊ १० मार्च– आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा शान्त वातावरण में सम्पन्न हुई जिसमें सर्व सम्मति से महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए मुख्य रूप से भारतीय सेना में शहीद परिवारों के बालकों की शिक्षा के लिए आर्य समाज ने निःशुल्क प्रशिक्षण का संकल्प लिया है जिसके लिए गुरूकुल वृन्दावन मथुरा की भूमि का चयन किया गया है जो योग ऋषि स्वामी रामदेव जी के संरक्षण में संचालित किया जायेगा यह आर्य समाज के लिए गौरव का विषय है इस कार्यक्रम का शुभारम्भ शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८६६ में काशी में शास्त्रार्थ किया था और पूरी काशी के विद्वानों को मूर्तिपूजा वेदविरूद्ध है इस विषय पर शास्त्रार्थ की चुनौती देकर परास्त किया था इस घटना को इस वर्ष १५० वर्ष हो रहे हैं इसी स्मृति को विशाल आर्य महासम्मेलन के रूप में १८,१६, २० अक्टूबर २०१६ को सभा ने मनाने का निश्चय किया है जो अखिल भारत वर्षीय स्तर का वृहद महा आर्य सम्मेलन होगा देश की समस्त सभाओं को भी इसमें सहयोगी संयोजक के रूप में रक्खा जायेगा क्योंकि यह आर्य समाज की प्रतिष्ठा और सम्मान का विषय है। साथ ही म० नारायण स्वामी जी की तपस्थली रामगढ़तल्ला आश्रम में प्रतिवर्ष की तरह योग एवं चिन्तन शिविर का आयोजन ७ जून से १० जून २०१६ को आयोजित किया जायेगा स्मरण रहे यह ६६वाँ शिविर है आगामी वर्ष वहाँ पर शताब्दी सम्मेलन का आयोजन होना है उसकी भी तैयारी अभी से करनी है समस्त आर्य जगत से अपेक्षा करूंगा कि म० नारायण स्वामी जी की तपस्थली को एक बार अवश्यमेव देखें और उनके कार्यों के प्रति परिचित हो इस वर्ष अपने मानसिक शारीरिक स्वास्थ्य को उत्तम बनायें।

सभा प्रधान जी, सभा मंत्री जी ज्ञानेन्द्र गाँधी जी सभाकोषाध्यक्ष अरविन्द कुमार जी, मास्टर ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, डा० डोरीलाल जी बरेली, दिनेश कश्यप, वृद्धाश्रम के लिए भूमि पर विचार व्यक्त किये काशी से पधारे शिष्टमण्डल में दिनेश आर्य, प्रमोद आर्य, रवि आर्य, विजय आर्य आदि–आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। राजीव रंजन उपाध्यक्ष जी का सम्मान किया गया, प्रदेश स्तर पर संस्कृत भाषा प्रशिक्षण के लिए उ०प्र० संस्कृत अकादमी, लखनऊ के कार्यों की प्रसंसा की गयी अकादमी से आर्य समाजों एवं आर्य कन्या पाठशाला, आर्य इन्टर कालेज में संस्कृत प्रशिक्षण की काक्षाओं संस्कृत सम्भाषण प्रशिक्षण हेतु आचार्यों की मांग की गयी, और अपेक्षा की गयी कि प्रदेश की आर्य समाजें अपने यहां संस्कृत भाषा को सिखाने के लिए उत्साहित अन्यों को भी प्रेरणा प्रदान करेंगे, आर्य कन्या पाठशाला हरदोई की शताब्दी मनाने का निश्चय किया गया। जिसके अर्न्तगत पूरे भारत में कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहेगा। सभा प्रधान एवं सभी मंत्री ने प्रदेश आये सभी अतंरंग सदस्यों तथा पदाधिकारियों का धन्यवाद करते हुए सभी आर्यजनों को आगामी होली की शुभकामनाएँ दी। शान्तिपाठ के साथ सभा समापन हुई।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

होली के वास्तविक स्वरूप को समझें

होली पर्व पर अपनी आदत के अनुसार नवबुद्ध अम्बेडकरवादी सोशल मीडिया में चिल्ला रहे है कि होलिका दहन नारी अधिकारों का दमन है। होलिका का दोष क्या था? होलिका को किसने जलाया? क्या होलिका को जलाते समय उसके परिजन वहाँ मौजूद थे? होलिका भली थी या बुरी यह तो मैं नहीं जानता। पर पढ़ लिखकर इतना जरूर समझा कि होली किसी स्त्री को जिन्दा जलाकर जश्न मनाने की सांकेतिक पुनरावृत्ति है। ऐसा करना ब्राह्मणवादी और मनुवादी सोच है। बला बला बला...

इस पर्व का प्राचीनतम नाम वासन्ती नव सस्येष्टि है अर्थात् बसन्त ऋतु के नये अनाजों से किया हुआ यज्ञ, परन्तु होली होलक का अपभ्रंश है। यथा–

- तृणाग्निं भ्रष्टार्थ पक्वशमी धान्य होलकः (शब्द कल्पद्रुम कोष) अर्धपक्वशमी धान्यैस्तृण भ्रष्टैश्च होलकः होलकोऽल्पानिलो मेदः कफ दोष श्रमापह। (भाव प्रकाश)

अर्थात तिनके की अग्नि में भुने हुए (अधपके) शमो–धान्य (फली वाले अन्न) को होलक कहते हैं। यह होलक वात–पित्त–कफ तथा श्रम के दोषों का शमन करता है।

होलिका किसी भी अनजा के ऊपरी पर्त को होलिका कहते हैं जैसे चने का पट पर (पर्त) मटर का पट पर (पर्त), गेहूँ, जौ का गिद्दी से ऊपर वाला पर्त। इसी प्रकार चना, मटर, गेहूँ, जौ की गिदी को प्रहलाद कहते हैं। होलिका को माता इसलिए कहते है कि वह चनादि का निर्माण करती (माता निर्माता भवति) यदि यह पर्त पर (होलिका) न हो तो चना, मटर रूपी प्रहलाद का जन्म नहीं हो सकता। जब चना, मटर, गेहूँ व जौ भुनते हैं तो वह पट पर या गेहूँ, जौ की ऊपरी खोल पहले जलता है, इस प्रकार प्रहलाद बच जाता है। उस समय प्रसन्नता से जयघोष करते हैं कि होलिका माता की जय अर्थात् होलिका रूपी पट पर (पर्त) ने अपने को देकर प्रहलाद (चना–मटर) को बचा लिया।

अधजले अन्न को होलक कहते हैं इसी कारण इस पर्व का नाम होलिकोत्सव है और बसन्त ऋतुओं में नये अन्न से यज्ञ (येष्ट) करते हैं। इसलिए इस पर्व का नाम वासन्ती नव सस्येष्टि है। यथा वासन्ती बसन्त ऋतु नव–नये। येष्टि–यज्ञ। इसका दूसरा नाम नव सम्वतसर है। मानव सृष्टि के आदि से आर्यों की यह परम्परा रही है कि वह नवान्न को सर्वप्रथम अग्निदेव पितरों को समर्पित करते थे। तत्पश्चात् स्वयं भोग करते थे। हमारा कृषि वर्ग दो भागों में बटा है १. वैशाखी, २. कार्तिकी। इसी को क्रमशः वासन्ती और शारदीय एवं रबी और खरीफ की फसल कहते हैं। फाल्गुन पूर्णमासी वासन्ती फसल का आरम्भ है। अब तक चना, मटर, अरहर व जौ आदि अनेक नवान्न पक चुके होते हैं। अतः परम्परानुसार पितरों देवों को समर्पित करें, कैसे सम्भव है। तो कहा गया है–

अग्निवैदेवानाम मुखं, अर्थात अग्नि देवों–पितरों का मुख है जो अन्नादि शाकल्यादि आग में डाला जायेगा। वह सूक्ष्म होकर पितरो देवों को प्राप्त होगा। पौराणिक मत में कथा इस प्रकार है–होलिका हिरण्यकश्यपु नाम के राक्षस की बहिन थी। उसे यह वरदान था कि वह आग में नहीं जलेगी। हिरण्यकश्यपु का प्रह्लाद नाम का आस्तिक पुत्र विष्णु की पूजा करता था। वह उसको कहता था कि विष्णु को न पूजकर मेरी पूजा किया कर। जब वह नहीं माना तो हिरण्यकश्यपु ने होलिका को आदेश दिया कि वह प्रह्लाद को आग में लेकर बैठे। वह प्रह्लाद को आग में गोद में लेकर बैठ गई, होलिका जल गई प्रह्लाद बच गया। होलिका की स्मृति में होली का त्यौहार मनाया जाता है। जो नितांत मिथ्या है।

होली उत्सव का प्रतीक है। स्वयं से पहले जड़ और चेतन देवों को आहुति देने का पर्व हैं। आईये इसके वास्तविक स्वरूप को समझ कर इस सांस्कृतिक त्योहार को मनाये। होलिका दहन रूपी यज्ञ में यज्ञ परम्परा का पालन करते हुए शुद्ध सामग्री, तिल, मुंग, जड़ी बूटी आदि का प्रयोग कीजिए।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथाष्टमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न- मनुष्य की सृष्टि प्रथम हुई या पृथिवी आदि की?

उत्तर- पृथिवी आदि की। क्योंकि पृथिव्यादि के बिना मनुष्य की स्थिति और पालन नहीं हो सकता।

प्रश्न-सृष्टि की आदि में एक वा अनेक मनुष्य उत्पन्न किये थे वा क्या?

उत्तर-अनेक। क्योंकि जिन जीवों के कर्म ऐश्वरी सृष्टि में उत्पन्न होने के थे उनका जन्म सृष्टि की आदि में ईश्वर देता है। क्योंकि 'मनुष्या ऋषयश्च ये। ततो मनुष्या अजायन्त' यह यजुर्जेद में लिखा है। इस प्रमाण से यही निश्चय है कि आदि में अनेक अर्थात् सैकड़ों, सहस्त्रों मनुष्य उत्पन्न हुए। और सृष्टि में देखने से भी निश्चित होता है कि मनुष्य आदि की बाल्य, युवा वा वृद्धावस्था में सृष्टि हुई थी अथवा तीनों में?

उत्तर युवावस्था में। क्योंकि जो बालक उत्पन्न करता तो उनके पालन के लिए दूसरे मनुष्य आवश्यक होते और वृद्धावस्था में बनाता तो मैथुनी सृष्टि न होती। इसलिये युवावस्था में सृष्टि की है।

प्रश्न- कभी सृष्टि का प्रारम्भ है वा नहीं?

उत्तर- नहीं। जैसे दिन के पूर्व रात और रात के पूर्व दिन तथा दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन बराबर चला आता है, इसी प्रकार सृष्टि के पूर्व प्रलय और प्रलय के पूर्व सृष्टि तथा सृष्टि के पीछे प्रलय और प्रलय के आगे सृष्टि, अनादि काल से चक्र चला आता है। इस का आदि वा अन्त नहीं किन्तु जैसे दिन वा रात का आरम्भ और अन्त देखने में आता है उसी प्रकार सृष्टि और प्रलय का आदि अन्त होता रहता है। क्योंकि जैसे परमात्मा, जीव, जगत् का कारण तीन स्वरूप से अनादि हैं वैसे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय प्रवाह से अनादि हैं। जैसे नदी का प्रवाह वैसा ही दीखता है, कभी सूख जाता, कभी-कभी नहीं दीखती फिर बरसात में दीखता और उष्णकाल में नहीं दीखता। ऐसे व्यवहारों को प्रवाहरूप जानना चाहिए। जैसे परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव अनादि हैं वैसे ही उसके जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करना भी अनादि हैं। जैसे कभी ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का आरम्भ और अन्त नहीं इसी प्रकार उसके कर्तव्य कर्मों का भी आरम्भ और अन्त नहीं।

प्रश्न- ईश्वर ने किन्हीं जीवों को मनुष्य जन्म, किन्हीं को सिंहादि क्रूर जन्मः किन्हीं को हरिण, गाय आदि पशु, किन्हीं को वृक्षादि कृमि कीट पतXादि जन्म दिये हैं। इससे परमात्मा में पक्षपात आता है।

उत्तर- पक्षपात नहीं आता। क्योंकि उन जीवों के पूर्व सृष्टि में किये हुए कर्मानुसार व्यवस्था करसे से। जो कर्मके बिना जन्म देता तो पक्षपात आता।

प्रश्न-मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई?

उत्तर- त्रिविष्टप अर्थात् जिसको 'तिब्बत' कहते हैं।

प्रश्न- आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक?

उत्तर- एक मनुष्य जाति थी। पश्चात् 'विजानीह्यार्य्यान्ये च दस्यवः यह ऋग्वेद का वचन है। श्रेष्ठों का नाम आर्य, विद्वान् देव और दुष्टों के दस्यु अर्थात् डाकू, मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। 'उत शूद्रे उतार्ये' वेद वचन। आर्यों में पूर्वोक्त प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए। द्विज विद्वानों का नाम आर्य और मूर्खों का नाम शूद्र और अनार्य अर्थात् अनाड़ी नाम हुआ।

प्रश्न- फिर वे यहां कैसे आये?

उत्तर- जब आर्य औद दस्युओं में अर्थात् विद्वान् जो देव अविद्वान् जो असुर, उनमें सदा लड़ाई बखेड़ा हुआ किया, जब बहुत उपद्रव होने लगा तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बसे। इसी से देश का नाम 'आर्यावर्त्त' हुआ।

प्रश्न- आर्यावर्त्त की अवधि कहां तक है?

उत्तर- आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्य्यावर्त्तं विदुर्बुधाः।।१।।
सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशमार्यावर्त्तं प्रचक्षते।।२।। मनु०।

उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व और पश्चिम में समुद्र।।१।। तथा सरस्वती पश्चिम में अटक नदी, पूर्व में दृषद्वती जो नेपाल के पूर्व भाग पहाड़ से निकल के बंगाल के आसाम के पूर्व और ब्रह्मा के पश्चिम ओर होकर दक्षिण के समुद्र में मिली है जिसको बह्मपुत्रा कहते हैं और जो उत्तर के पहाड़ों से निकल के दक्षिण के समुद्र की खाड़ी में अटक मिली है। हिमालय की मध्यरेखा से दक्षिण और पहाड़ों के भीतर और रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने देश हैं उन सबको आर्यावर्त्त इसलिये कहते हैं कि यह आर्यावर्त्त देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त्त कहाया है।

प्रश्न- प्रथम इस देश का नाम क्या था और इसमें कौन बसते थे?

उत्तर- इसके पूर्व इस देश का नाम कोई भी नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। क्योंकि आर्य लोग सृष्टि की आदि में कुछ काल के पश्चात् तिब्बत से सूधे इसी देश में आकर बसे थे।

क्रमशः

विश्व पर्यावरण समस्या और यजुर्वेद

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की दृष्टि से आज विश्व समाज प्रतिदिन नवीन उच्च शिखर का स्पर्श कर रहा है। इस वैज्ञानिक विकास से मानव अन्यान्य ग्रह नक्षत्रों पर भी अपनी उपस्थिति प्रदर्शित कर चुका है। मानव जीवन सुख सुविधा सम्पन्न बन रहा है। किन्तु प्रश्न यह है कि इस चतुर्दिक विकास के चलते भी क्या मानव जीवन निरापद एवं निष्कण्टक है? प्रत्युत्तर होगा, नहीं।

शतायु पुरुष अकाल ही काल कवलित हो रहा है तो क्यों? इतनी वैज्ञज्ञनिक उन्नति के उपरान्त भी हम असहाय क्यों है? क्यों नित्यप्रति असाध्य रोगों की ओर हम अग्रसर हो रहे हैं? कैंसर जैसे असाध्य रोग के सही उपचार की हम खोज ही कर पाये हैं कि 'एड्स' नाम की महामारी सम्पूर्ण विश्व को अपने में समाहित करने के लिए सुरसावत् विकराल रूप में हमारे समक्ष खड़ी है, तो क्यों? इसका एक ही उत्तर हमें मिलेगा–प्रकृति से असामांजस्य। प्रतिफल पर्यावरण स्वयं वैदिक ऋचा प्रस्तुत करते हुए कहती है–

यस्तित्जाज सचिविदं सखायं, न तस्य वाच्यपि भागोऽस्ति।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति, न हि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।। –ऋग्वेद १०.७१.६

अर्थात् जो मनुष्य अपने परमप्रिय मित्र परमात्मा की हिकारिणी वेद वाणी को त्याग देता है, विस्मृत कर देता है अथवा उपेक्षा कर देता है, वह वेदवाणी के परमोपयोगी लाभ से वंचित हो जाता है।

वस्तुतः विश्व पर्यावरण की समस्या पंच महाभूतों से सम्बन्धित है। रासायनिक पदार्थों का उत्सर्जन, वनों का विनाश, वैदिक यज्ञ विधि का परित्याग आदि ऐसे अनेक कारण हैं, जिससे पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। इन सबमें प्रधानभूत कारण है– वनों का विनाश।

पर्यावरण 'शब्द' कर हलायुध कोश में 'फलक' अर्थ दिया गया, जिसका सामान्य भाषा में अर्थ है– ढक्कन। पर्यावरण एक ऐसा फलक है जो समस्त ब्रह्माण्ड को स्वयं में समाहित करके हमें सुरक्षा प्रदान करता है। किन्तु यह सुरक्षा कैसे हो, इसका समाधान स्वयं वेद जगत को वृक्ष बता कर करता है–

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्धयत्।
दिवमग्रेणात्पृशादान्तरिक्ष पृथिवीमदूँहीद्वसुवने वसुधेयस्य वेतुर्यज।।
–यजु. २८/२०

सनुहरे पत्तों वाला, मधुर शखाओं वाला और अच्छे फल वाला, दिव्य संसार रूपी पीपल वृक्ष दिव्य गुणों द्वारा दिव्य जीव को बढ़ता है।

उक्त मंत्र की द्वितीय पंक्ति इसकी उपादेयता को सिद्ध करते हुए कहती है कि संसार रूपीं वृक्ष अपने प्रथम तेज से द्युलोक का स्पर्श करता है, मध्य भाग से अंतरिक्ष को तथा अंतर्भाग से पृथिवी को दृढ़ करता है। उक्त मंत्र में संसार रूपी वृक्ष की 'सुपिप्पल' संज्ञा दी गई है।

सुपिप्पल का समानार्थी पद है– 'अश्वती वृक्ष'। वेदवाणी का अनुसरण करते हुए ही गीता में श्रीकृष्ण अपने विराट रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं– 'अश्वत्थः वृक्ष की महत्ता को स्पष्ट करते हुए यजुर्वेद की ऋचा कहती है–

"अश्वत्थे वो निषदनम् पर्णे वो वसतिष्कृता।"
–यजु. ३५/४

'हे जीव, अश्वत्थ वृक्ष पर तेरा अधिष्ठान है किन्तु इस पर पर्ण सदृश तुम्हारा गृह है।' इस मन्त्र में वेद हमारे घर को 'पर्ण' (पत्ते) के समान अस्थिर बताकर वस्तुतः हमाको चेतावनी दे रहा है यदि इस वृक्ष के सम्पर्क से तुम दूर हुए तो जीवन से भी दूर हो जाओगे। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज हम विश्वपर्यावरण की जिस विकाराल समस्या का सामना कर रहे हैं, इसका मूल कारण वेद की इस चेतावनी को अनसुना करना ही है। विश्व की संरचना वृक्षों के बिना संभव नहीं है। इसका प्रतिपादन करते हुए वेदमंत्र कहता है–

किंस्विद्वनं क उ स वृक्षऽआस यतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन्।। –यजु० १७/२०

कौन सा वह वन या कौन सा वह वृक्ष है जिस आधार पर विश्वकर्मा ने द्युलोक एवं पृथिवी की संरचना की है। अथच–नमो वृक्षेभ्यः (यजु. १६/१७), वृक्षाणां पतये नमः (यजु.१६/१६), वनानां पतये नमः (यजुः १६/१८) आदि मंत्राश हमें प्रतिपल वनों के संवर्धन, संरक्षण एवं वृक्षारोपण का संदेश देते हैं।

वनों के संवर्धन एवं संरक्षण पर ही मानव जीवन निर्भर है क्योंकि ये वन ही औषधियों के जनक हैं। औषधेः त्रायस्व (यजुः ४/१) हे औषधि। हामरी रक्षा करो 'वचन के द्वारा वेद इन औषधियों का महत्व प्रतिपादित करता है। किन्तु हम इन औषधियों का विनाश करके स्वयं का ही विनश कर रहे हैं।

वेद पुनः चेतावनी देता है– मौषधीहिंसीः (यजु. ६/२२) औषधियों को नष्ट मत करो।

यदि हम वनौषधियों का हम संपोषण करें तो वेद औषधि से कहता है–

दीर्घायुस्तऽऔषधे खनिता। (यजु. १२/१००)

हे औषधि! तेरा खोदने वाला दीर्घायु प्राप्त करे। इन औषधियों का संपोषण कैसे हो? इनका समाधान भी वेद करता हुआ कहता है–

वनस्पतयश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम्। (यजु. १८/१३)

अथ च आरण्याश्च में अज्ञेन कल्पन्ताम्। अर्थात् अरण्य अथवा वनस्पतियों का यज्ञ के द्वारा संपोषण करो। यजुर्वेद के २२वें अध्याय के २८वें मंत्र में वृक्ष के पुष्प, फल, शाखाओं, मूलों एवं वनस्पतियों के लिए यज्ञ को ही उत्तम क्रिया माना है।..... मूलेभ्यः स्वाहा, शाखाभ्यः स्वाहा, वनस्पतिभ्यः स्वाहा...। यजु० २२/२८

यज्ञ की इस उपदेयता के कारण ही वेद ने कहा यज्ञो वैश्रेष्ठतमं कर्म।

यदि हम विश्वपर्यावरण समस्या से मुक्ति चाहते हैं तो निश्चय ही हमें वेदमार्ग का अनुसरण कर वनों का संवर्धन एवं संरक्षण करना चाहिए।

–साभार

आर्य मित्र साप्ताहिक के स्वामित्व के सम्बन्ध में विवरण

फार्म-४ प्रपत्र नियम-८

१. प्रकाशन का स्थान	:	आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
२. प्रकाशन की अवधि	:	साप्ताहिक
३. प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक	:	स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
४. राष्ट्रीयता	:	भारतीय
५. प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक का नाम	:	गुरूकुल महाविद्यालय पूठ, पोस्ट–बहादुरगढ़, जिला–हापुड़।
६. पत्र का स्वामित्व जिनके पास है	:	आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

मैं स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी के अनुसार ऊपर दिये हुए विवरण सत्य हैं।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक
आर्य मित्र साप्ताहिक

राष्ट्रीय एकता में आर्य समाज की भूमिका

-स्व. प्रकाशवीर शास्त्री

राजस्थान के प्रवास में स्वामी दयानन्द उन दिनों उदयपुर ठहरे हुए थे। अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का कुछ भाग यहाँ बैठकर स्वामी जी लिख रहे थे। महाराणा उदयपुर के आग्रह पर राजमहलों में स्वामी जी के भाषण हो रहे थे। राजमहल की रानियाँ भी उनके प्रवचनों का लाभ उठा रही थीं। उन दिनों रियासत के दीवान श्री मोहनलाल विष्णुलाल पांडया जी जो स्वामी जी के साथ छाया की तरह रहते थे एक दिन स्वामी जी से पूछ बैठे महाराज इस देश की एकता कैसे मजबूत हो सकती है। स्वामी जी बोले अब तक एक भाषा, एक धर्म और समाज में सबको एक जैसा सम्मान नहीं मिलेगा तब एक एकता आनी कठिन है।

अब से सौ वर्ष पहले जब आर्य समाज की स्थापना हुई उसमें भी स्वामी जी ने इसका विशेष ध्यान रखा। वह स्वयं गुजराती थे और उनके अध्ययन का माध्यम संस्कृत भाषा थी। इतने पर भी स्वामी जी ने अपने ग्रन्थों और भाषणों की भाषा हिन्दी को ही चुना। कई स्थानों पर उन्होंने इसके लिए कहा भी– जब तक किसी राष्ट्र में अभिव्यक्ति का माध्यम कोई एक सशक्त भाषा नहीं होती जिसे सारा देश समझ सके तब तक एकता की चर्चाएं आकाश में ही घूमती रहेंगी। इस तथ्य से स्वामी जी भलीभाँति परिचित थे। स्वामी जी ने हिन्दी के लिए अपने ग्रन्थ में आर्य भाषा शब्द का प्रयोग किया है। हिन्दी, हिन्दू हिन्दुस्तान आदि शब्द तो मुगल काल से चले। उससे पहले जब देश का नाम आर्यावर्त था और उसके निवासी आर्य कहलाते थे तो भला उनके कामकाज की भाषा को आर्य भाषा के अतिरिक्त कहा भी और क्या जा सकता था।

ब्रह्म समाज के एक संस्थापक नेता ने स्वामी दयानन्द जी की कलकत्ता यात्रा में एक बार उनसे कहा–कहीं यदि आपने अंग्रेजी पढ़ी होती तो कमाल हो जाता। उन्होंने पूछा वह कौन सा कमाल है जो अंग्रेजी पढ़ने से होता है। इस पर वह बोले वेद का जो सन्देश आज आप भारत में दे रहे हैं उसे इंग्लैंड, अमरीका और दूसरे भी उन देशों में फैलाया जा सकता था जिसकी भाषा अंग्रेजी है। इस पर ब्रह्म समाज के उस नेता की आत्महीनता पर हंसते हुए स्वामी जी ने कहा–मुझसे भी बड़ी एक भूल आपने अपने जीवन में यह कर रखी है जो संस्कृत और हिन्दी नहीं जानते। कहीं यदि आप इस इन दोनों भाषाओं को जानते होते तो हम एक और एक बनकर ग्यारह हो जाते। दोनों मिलकर पहले भारत में इस ज्ञान का प्रकाश करते और बाद में बाहर चलने की सोचते। जिनके अपने घर में कूड़ा–करकट भरा है वह पड़ोसियों को सफाई के उपदेश कैसे दे सकते हैं?

आर्य समाज के गुरुकुलों, डी.ए.वी. कालेजों और कन्या विद्यालयों में प्रारम्भ से ही अध्ययन का माध्यम हिन्दी रही है। संस्कृत अतिरिक्त विषय के रूप में पढ़ाई जाती थी और शिक्षा हिन्दी में दी जाती थी। गाँधी जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय के रजत जयन्ती समारोह में भाषण देते हुए कहा था–जब हरिद्वार के जंगलों में बैठकर स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी के माध्यम से गुरूकुलों में विज्ञान, साहित्य और आयुर्वेद की शिक्षा दे सकते हैं तो गंगा के किनारे बैठ कर आप लोग इन बच्चों को टेम्स का पानी क्यों पिला रहे हो? भारत भर में और दूसरे सत्रह देशों में भी जहाँ आर्य समाज की शाखाएं अथवा संस्थायें हैं वहाँ हिन्दी का सामान्य ज्ञान और व्यवहार आवश्यक है। आश्चर्य है पराधीन भारत में तो हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में देश के सभी भागों में लोकप्रिय हुई। पर स्वाधीनता के बाद कुछ राज्यों में हिन्दी विरोध को राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया जाने लगा।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिस धर्म के शुद्ध स्वरूप की रक्षा के लिए आर्य समाज की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् १९३१ तदनुसार ७ अप्रैल, १८७५ को बम्बई नगर में की वह कोई संकुचित धर्म नहीं था। जिस धर्म को वह पूरे भारत में और विश्व में फैलाना चाहते थे वह भी सब के लिए समान रूप से ग्राह्य था। भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन ने पीछे अंग्रेजी के सेक्युलर शब्द का अर्थ जो धर्म निरक्षेप करते हैं उन्हें समझाते हुए कहा था–धर्म एक शाश्वत सत्य है जो प्राणिमात्र के कल्याण की कामना करता है। सेक्युलर शब्द का अर्थ सम्प्रदाय और मतनिरक्षेप तो हो सकता है धर्मनिरपेक्ष नहीं। सम्प्रदाय और मत व्यक्ति विशेषों और परिस्थितियों की पैदावार होते हैं। धर्म से इनकी तुलना नहीं की जा सकती।

पीछे कुछ शताब्दियां ऐसी भी निकलीं जिनमें धर्म की आड़ में व्यक्तिगत द्वेष तनाव और उपद्रवों को बहुत प्रश्रय मिला। कुछ स्वार्थी तत्वों ने मिल कर धर्म के असली स्वरूप को ढक दिया। उन्हें जब और जैसे अनुकूल लगा उसी के अनुसार धर्म की व्याख्या कर ली। जब कहीं उनका विरोध और आलोचना हुई तो उन्होंने वेद का सहारा ले लिया। वेद भगवान का ज्ञान है वह असत्य नहीं हो सकता यह युक्ति दे दी जाती थी।

गौतम बुद्ध को इसीलिए वेदों के विरूद्ध आवाज उठानी पड़ी। लेकिन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों को सही और युक्तिसंगत अर्थ कर के समाज में चल रही उन भ्रान्तियों का दृढ़ता से निराकरण किया। आर्य समाज के जो दस नियम उन्होंने बनाये हैं वह भी मनुष्य मात्र के लिए उपयोगी हैं। इनमें कहीं संकुचित पन की झलक देखने को नहीं मिलेगी। यदि कहीं आर्य समाज के कार्यक्रमों में संकुचितपन की कोई गंध मिलेगी तो वह आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं का अपना दोष तो हो सकता है, स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्य समाज के सिद्धान्तों का दोष नहीं कहा जा सकता।

जब स्वामी जी आर्य समाज की स्थापना देश में घूम–घूम कर कर रहे थे उस समय भारत भौगोलिक और भावनात्मक दृष्टि से भी अनेकों भागों में विभक्त हो गया था। लगभग ५७० तो देशी रियासतें ही थीं जो अपनी अहंमन्यता और विलासिता के चक्कर में मस्त थीं। देश का साठ प्रतिशत से कुछ अधिक भाग जो रियासतों से बाहर था उस पर अंग्रेजों ने आधिपत्य कर रखा था। सामाजिक कुरीतियों को बढ़ावा देने में विदेशी शासन का भी बहुत बड़ा हाथ रहा है। जन्ममूलक जात–पांत और छूआछूत को उभारने में कोई कसर नहीं रखी गई। स्वामी दयानन्द ने देखा यदि यह ही स्थिति इस देश की देर तक चलती रही तो इसके पराधीनता के बंधन भी कड़े हो जायेंगे और समाज टुकड़ों–टुकड़ों में विभक्त हो कर पतन के गर्त में जा गिरेगा।

आर्य समाज ने पिछले सौ वर्षों में जन्मगत जात–पांत को मिटाने और हरिजन समस्या के समाधान में भी पूरी शक्ति लगाई है। यद्यपि यह समस्या समाप्त होने मे तो अभी और कुछ समय लेगी क्योंकि इसकी जड़ें बहुत गहरी पहुँच चुकी है पर देश ने इसके भयंकर परिणामों को समझना प्रारम्भ कर दिया है। आज से पचास/साठ वर्ष पहले जो काम आर्य समाज इस देश में कर रहा था वह अब सरकार ने भी अपने हाथों में ले लिया है। छूआछूत के इस विष को समाप्त करने के लिए संविधान में स्पष्ट व्यवस्था की गई है। लेकिन आर्य समाज की मान्यता है जब तक जात–पांत को हो मूल से नहीं मिटाया जायगा तब तक छूआछूत की भावना समाप्त होनी बहुत मुश्किल है। नगरों में तो जरूर इसमें कुछ कमी हुई पर भारत के ७२ प्रतिशत गाँव आज भी इस रोग से ग्रस्त हैं।

राष्ट्रीय एकता का जो स्वप्न आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी ने अब से सौ वर्ष पूर्व देखा था कहीं यदि उस समय के शासन ने भी उस समय उनका सहयोग दे दिया होता तो आज देश का चित्र ही दूसरा होता। पर ब्रिटिश शासन का हित तो भारतवासियों को आपस में लड़ाने में ही था। आर्य समाज के राष्ट्रीय एकता के लिए जो प्रयास किये इनमें महिला जागरण, पिछड़े क्षेत्रों और आदिवासी क्षेत्रों में प्रचार आदि के अतिरिक्त धार्मिक क्षेत्र में वैचारिक क्रान्ति लाती भी था।

बम्बई नगर के गिरगाँव मुहल्ले में सबसे पहली आर्य समाज बनी। इस आर्य समाज के न्यासियों और दानदाताओं में रहमतुल्ला नाम के मुसलमान भी न्यासी थे। अन्य न्यासियों में जस्टिस गोविन्द रानाडे और बम्बई नगर के कुछ दूसरे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आर्य समाज केप्रवर्तक का ध्येय सभी सम्प्रदायों में व्याप्त कुरीतियों को दूर कर सच्चे धर्म में आस्था जागाना था। किसी से घृणा पैदा करना नहीं था। एक दो बार इसके लिए सभी मतों के प्रतिनिधियों को बुलाकर उच्चस्तरीय सम्मेलन भी उन्होंने किये। उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में चांदपुर नामक स्थान में एक बहुत बड़ा मेला लगता है। स्वामी जी ने इसी तरह का एक सम्मेलन यहाँ बुलाया था। इसमें मुसलमानों के प्रतिनिधि सर सय्यद अहमद खाँ और ब्रह्मसमाज की ओर से केशवचन्द्र सेन तथा ईसाइयों की ओर से भी दो प्रतिनिधि पहुंचे। सम्मेलन के प्रमुख विचारणीय विषयों में राष्ट्रीय एकता के लिए धार्मिक संगठनों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा चली। ऐसा ही एक सम्मेलन दिल्ली दरबार के समय भी उन्होंने बुलाया था। आर्यसमाज को आज अपनी जन्म–शताब्दी के अवसर पर इन विचारों को आगे बढ़ाने में अपनी प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए।

धर्म की आड़ में जो निजी दुकानें खुल रही हैं उन्हें भी रोकना है और धर्म के उस उदार स्वरूप की भी प्रतिष्ठा करनी है जो सबको साथ लेकर चल सके।

नवान्न के आगमन और शीत समापन का सुखद पर्व– होलिकोत्सव

– डॉ0 प्रशस्यमित्र शास्त्री (महोपदेशक)
बी.29 आनन्द नगर, रायबरेली)

फाल्गुन की समाप्ति के साथ ही शीत ऋतु की अन्त्येष्टि हो जाती है। असहाय निर्वस्त्र दरिद्र लोगों के लिए यह एक राहत का दिन होता है। प्राचीन काल में वसन्तोत्सव का आरम्भ इन्हीं दिनों होता था। सुन्दर आन्न की मंजरियां शनैः–शनैः वृक्षों में आने लगती हैं। पतझड़ के कारण गिरे हुए पत्तों की जगह शाखाओं में नई कोंपलें अंकुरित होकर मधुमास के आगमन की घोषणा करती हैं। मधुमास के आगमन के साथ ही वसन्त को चरम परिणति का निदर्शन इन्हीं दिनों उपलब्ध होता है।

यह समय न केवल आम, जामुन, बिल्व आदि सुन्दर रसीले फलों की उत्पत्ति का सन्देश लाता है अपितु अर्थ व्यवस्था की प्राण रबी की फसल के पकने और कटने का भी यही समय है। कृषि प्रधान भारतवर्ष की अर्थव्यवस्था पहले और आज भी इस रबी के मुख्य फसल पर ही केन्द्रित होती है। मनुष्य जब गेहूं, जौ, चना, मटर, सरसों, आदि नाना प्रकार के अन्न भण्डार को अपने खेत में पकता हुआ देखता है तो प्रसन्नता से नाच उठता है।

होलिका दहनः यज्ञ का विकृत रूप

आज चौराहों पर तथा गांव के समीप खुले जगहों पर कूड़ा–करकट घास–फूस इकट्ठा करके उसे जलाने की एक परम्परा खूब प्रचलित हो गयी है। वस्तुतः यह सब प्राचीन काल में किये जाने वाले पवित्र यज्ञ का ही विकृत रूप है। नये अन्न भण्डार के खेतों से आने के बाद लोग अपने गांव में सामूहिक यज्ञ किया करते थे, जिसमें नए पके हुए अनाज की बालियों को हवन सामग्री में प्रचुर मात्रा में उपयोग करते थे। आज भी यह प्रायः देखने में आता है कि जब गली चौराहों पर होली की अव्यवस्थित समिधाएं लोग फूंकने जाते है तो साथ कुछ लोग अपने घरों से जौ–गेहूं की बालियों को भी भूनने की दृष्टि से साथ में ले जाते हैं। अस्तु, कुछ भी हो प्राचीन काल में नवरात्र की प्राप्ति के बाद नए वर्ष के आगमन से पूर्व जो विशाल देव यज्ञ होता था जिसमें घृतादि सुगन्धित व पौष्टिक पदार्थों के साथ नावन्न की आहूतियां प्रदान की जाती थीं उसका ही भ्रष्ट रूप आजकल हमें होलिका दहन में प्राप्त हो रहा है।

संस्कृत में भुने अन्न का नाम 'होला' भी है। बिहार में भोज पुरी बोली में 'होरहा' उस अन्न को कहते हें जिसे खेत में उखाड़ कर तुरन्त ही भूनकर खाया जाता है। 'होरहा' चना या मटर का ही प्रायः होता है।

शीत समाप्ति के बाद इसी फाल्गुन पूर्णिमा के अवसर पर किए जाने वाले वसन्तोत्सव में मध्यकाल में एक नई परम्परा प्रारम्भ हुई, और वह थी लोगों द्वारा पारस्परिक अनुराग एवं अतिशय द्योतित करने के लिए एक दूसरे के वस्त्रों को सुन्दर रंगों द्वारा रंग देने की। इस वसन्तोत्सव में सभी लोग एकत्र होकर नृत्य वाद्य आदि बजाते हुए वसन्तोत्सव का भरपूर आनन्द उठाते थे सुन्दर सुगन्धित रंगीन पदार्थों का प्रक्षेपण एक दूसरे पर करते थे। मध्यकालीन संस्कृत साहित्य में भी राजाओं द्वारा आयोजित इस प्रकार के वसन्तोत्सवों का बहुशः उल्लेख उपलब्ध होता है। इस उत्सव में राजपरिवार के सदस्य भी सम्भ्रान्त नागरिकों एवं भद्र लोगों के साथ मिलजुल कर वसन्तोत्सव का पर्याप्त आनन्द लूटते थे।

उस समय परस्पर ऊंच–नीच की भावना भी नहीं होती थी तथा सभी लोग अत्यन्त शालीनता के साथ एक दूसरे की प्रतिष्ठा के अनुरूप व्यवहार व सौम्य आचरण भी करते थे।

गर्हित परम्पराएं त्याग दें

किन्तु आजकल वसन्तोत्सव का वह सात्विक रूप भी जुगुप्सित हो गया है। कीचड़, तारकोल और पेन्ट आदि पदार्थों को लोग एक दूसरे पर फेंक देते हैं तथा न छूटने वाले रंगों से मुख आदि के स्वरूप को भ्रष्ट करने में ही होली का उद्देश्य समझते हैं। अब तो अनेक स्थलों पर होली पारस्परिक प्रेम व सौहार्द का द्योतक न होकर शत्रुता का कारण भी बन जाती है। ट्रेन में कीचड़ फेंकना, ईंट पत्थर मारना, शीशे तोड़ देना आम बात है। एक बार होली से दिन एक कार में किसी गंभीर रोगी को अस्पताल ले जाते समय उच्छृंखल लोगों ने इतना परेशान कि रोगी तो मर ही गया साथ ही कार का ड्राइवर और एक अन्य व्यक्ति भी बुरी तरह घायल हो गया तथा कार का शीश आदि भी नष्ट हो गया।

अराजकता और उच्छृंखलता का नाम होली नहीं है। बेचारे दरिद्र निर्धनों की चारपाईयां, उनके झोंपड़े, छोटे होटल वालों के दुकानों की बेंचें, कुर्सियां आदि भी लोग मात्र मनोरंजन के लिए उठाकर होली की आग में झोंक देते हैं। ये सब प्रवृत्तियां निन्दित एवं गर्हित होने से त्याज्य हैं। हमें अपनी संस्कृति को इस तरह विकृत नहीं करनी चाहिए तथा इस होलिकोत्सव के यथार्थ स्वरूप को जनता में विस्तार के साथ प्रचार करना चाहिए।

आर्य समाज मन्दिरों में आज के दिन जो सामूहिक यज्ञ होता है उसमें निकटस्थ नागरिकों को निमन्त्रित करके इस वसन्तोत्सव, नवसंवत्सरोत्सव तथा नवान्नेष्टि के रूप में मनाये जाने वाले सौम्य व सात्विक देवयज्ञ की वास्तविक भावना को परिचित कराना चाहिए। क्योंकि आर्य समाज ही प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं को यथार्थ रूप में जनता के मध्य उपस्थित कर उसके उद्देश्य व महत्व को समझाने में समर्थ हो सकता है।

प्रेरक प्रसंग–

दण्ड बना पुरस्कार

संकलन– हरीश कुमार शास्त्री

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के जीवन के बाल्यकाल की एक विचित्र घटना है। लिंकन का जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। बाल्यकाल में किसी प्रकार अक्षरज्ञान कर लिया था। इस अक्षरज्ञान ने उन्हें महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ने की रुचि जागृत कर दी। पुस्तक खरीदने ो पैसे तो न थे, वे किसी प्रकार माँग कर अपना यह शौक पूरा किया करते थे।

एक बार वे किसी एक सुशिक्षित सज्जन के घर पर किसी कार्य से गये तो वहाँ उन्हें एक महापुरुष की जीवनी देखने को मिली। उसे पढ़ने की इच्छा हुई तो उन सज्जन के निहोरे करके पुस्तक माँग ली। उन महाशय को पता था कि किशोर को जीवनियाँ पढ़ने का शौक है। उन्होंने पुस्तक देते हुए कहा, "मैं पुस्तक दे रहा हूँ, किन्तु इसे सम्भाल कर रखना और एक–दो दिन में लौटा देना।" लिंकन पुस्तक ले आये। दिन को जब समय मिला तब पढ़ी और रात को पढ़ने की इच्छा होने पर भी पढ़ नहीं सकते थे, क्योंकि घर में प्रकाश की व्यवस्था ही नहीं थी। किन्तु लिंकन ने तरकीब निकाल ली। घर को गरम रखने के लिए रात्रि को आग जलाई जाती थी। परिवार आग तापता और फिर सो जाता। लिंकन को चैन कहाँ, उन्हें तो पुस्तक समाप्त करनी थी। परिवार सो गया और लिंकन पढ़ते रहे।

अन्त में पुस्तक का पठन पूरा हुआ। लिंकन ने पुस्तक को बरामदे में एक स्थान पर रख दिया और अपने बिस्तर पर जाकर सो गये। दैव–दुर्योग से रात्रि को वर्षा हुई। उसकी बौछार के छींटे बरामदे में रखी पुस्तक पर पड़े और पुस्तक खराब हो गयी।

लिंकन सबेरे उठे और पुस्तक पर दृष्टि गयी तो उनको रोना आ गया। पुस्तक को बिना मैली–कुचैली किये शीघ्र लौटा देने का वचन पूरा करना कठिन हो गया। उसी अवस्था में वे उस पुस्तक के स्वामी के पास उसे लौटाने के लिए गये। पुस्तक की दशा देखकर पुस्तक के स्वामी को क्रोध आ गया। लिंकन ने सारी स्थिति का यथावत् वर्णन कर दिया। किन्तु स्वामी को यह स्वीकार नहीं था। उसने तो कह दिया, "मैं यह पुस्तक नहीं लूँगा। मुझे नई पुस्तक लाकर दो।"

लिंकन नई पुस्तक कैसे खरीदें, उनके पास तो कानी कौड़ी भी नहीं थी। किन्तु पुस्तक का स्वामी था कि किसी प्रकार पसीजने का नाम ही नहीं लेता था। लिंकन गिड़गिड़ाये, अनुनय–विनय की, किन्तु सब व्यर्थ।

अन्त में उस व्यक्ति ने ही इस समस्या से निपटने का लिंकन को एक उपाय बताया। उसने कहा, "तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं तो तम मेरे यहां मजदरी करो। तीन दिन तक मेरे खेत में धान काटो ओर उस मजदूरी से तुम पुस्तक के मूल्य की भरपाई करो।'

लिंकन ने प्रसन्नता से प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। तीन दिन तक उसके खेत में धान काटने का कार्य कर अपनी समस्या का समाधान करवा लिया। इससे लिंकन को बड़ी प्रसन्नता हुई। बाल्यकाल में अथवा किशोरावस्था में इसी प्रकार की अनेक घटनाओं का लिंकन पर प्रभाव पड़ता रहा। संसार को देखने, जानने और परखने का अवसर मिला। इस प्रकार वे आगे बढ़ते गये और आगे बढ़ते गये।

वही निर्धन लिंकन एक दिन अमेरिका के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

दूसरों के गुण व अपने अवगुण देखने से ही प्रशस्त होगा विकास का मार्ग

-सीताराम गुप्ता

(ये उचित नहीं कि जो दोश हममें हैं उन्हें खोजकर दूर करने की अपेक्षा दूसरों पर आरोपित करते फिरें)

एक व्यक्ति जब भी अपनी पत्नी से कुछ पूछता तो पत्नी हमेशा जवाब नहीं दे पाती। उस व्यक्ति को लगा कि उसकी पत्नी आजकल कुछ ऊँचा सुनने लगी है। उसने पत्नी के लिए हियरिंग एड खरीदने की सोची। पत्नी को बिना बताए ही वो एक डॉक्टर के पास गया और पत्नी के लिए हियरिंग एड खरीदने की पहले वह निश्चित कर ले कि उसकी पत्नी को सचमुच ऊँचा सुनता है और कितना ऊँचा सुनता है। डॉक्टर ने सुझाव दिया कि वो पत्नी से पचास फुट की दूरी पर खड़ा होकर उससे कुछ पूछे। यदि उसे सुनाई न तो क्रमशः चालीस, तीस, बीस और दस फुट की दूरी से अपनी बात पूछे।

व्यक्ति ने घर जाते ही पचास फुट की दूरी से पत्नी से पूछा, "मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या?" पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। व्यक्ति ने फिर कुछ आगे आकर चालीस फुट की दूरी से पूछा, "मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या?" लेकिन जवाब नदारद। व्यक्ति ने पुनः तीस फुट की दूरी से पत्नी से पूछा, 'मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या? इस बार भी पत्नी की ओर से कोई जवाब नहीं आया। व्यक्ति ने फिर बीस फुट की दूरी से पूछा, "अरे मेरे पीछे से घर पर कोई आया था क्या?" लेकिन इस बार भी जवाब नहीं ही आया। उसे विश्वास हो गया कि पत्नी को ऊँचा ही नहीं बहुत ऊँचा सुनता है। दस फुट की दूरी से पूछने पर भी वही स्थिति रही। अब उसने बिल्कुल पास आकर कुछ जोर से पत्नी से पूछा, "अरे मेरे पीछे से घर कोई आया था क्या?" पत्नी का जवाब था, " मैं पाँच बार तो आपको कह चुकी हूँ कि आपके पीछे से कोई नहीं आया। क्या आपको कम सुनाई देने लगा है? कमोबेश हम सब की प्रायः ऐसी ही स्थिति रहती है। कमियाँ हममें होती हैं और उन्हें ढूंढने का प्रयास दूसरों में करते हैं।

दूसरों में कमियाँ निकालना व उनपर दोषारोपण करना करना हमारे लिए सामान्य सी बात होती है। मात्र अनुमान के आधार पर हम किसी को भी कठघरे में खड़ा करने से बाज नहीं आते। हद तो तब हो जाती है जब दोष हममें होता है और उसे आरोपित कर देते हैं दूसरों पर। हमें अपने सिवाय कोई भी दोषरहित नहीं लगता। हमें लगता है कि इस दुनिया में सभी लोगों में बहुत सी कमियाँ, बहुत से दोष हैं लेकिन हम पूरी तरह से निर्दोष हैं। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम तो यही होता है कि हमें अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान न होने से हम अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास ही नहीं करते और उन कमियों का बार–बार दोहराते रहते हैं। दूसरे जब हम दूसरों पर गलत दोषारोपण करते हैं तो निश्चित रूप से हमारे संबंधों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जब हम बार–बार दूसरों में दोष देखते हैं अथवा दोषारोपण करते हैं तो हमारी विश्वसनीयता भी जाती रहती है और हमारे ठीक कहने पर भी कोई आसानी से विश्वास नहीं कर पाता। हमारे लिए यही श्रेयस्कर है कि हम दूसरों में कमियाँ खोजने की बजाय अपनी कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करते रहें। कहा गया है कि अपने अवगुण व दूसरों के गुण देखो। हमारी अात्मिक उन्नति के लिए अनिवार्य है कि हम अपने अवगुणों से मुक्त होने का प्रयास करें। ये तभी संभव है जब हमें अपने दोषों का पता हो। बीमारी का सही निदान हुए बिना उचित उपचार कैसे किया जा सकता है? यदि हम दूसरों में दोष खोजते रहेंगे तो अपने दोषों को देखने का न तो अवसर ही मिलेगा और न स्वदोषदर्शन में रूचि ही रहेगी। उचित तो यही है कि हम दूसरों के गुणों को अवश्य देखें और उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें।

वास्तव में दूसरों के गुण व अपने अवगुण देखने से ही प्रशस्त होगा आत्मविकास व समाजविकास दोनों का मार्ग। हमारे संबंधों में जो विकार उत्पन्न हो जाते हैं उनसे बचने का भी ये उत्तम मार्ग है। दूसरों के गुण देखने का अभिप्राय यही है कि हम केवल अच्छी बातों को ही देखें और उन गुणों को ग्रहण कर स्वयं में भी विकसित करें। दूसरों के प्रति हमारी ईर्ष्या इसमें बाधक बनती है। हमारी सबसे बड़ी विडंबना ये है कि हम स्वभाव से ही अपने प्रतिद्वंदी या विरोधी के सद्गुणोंव उसके मित्रों को, चाहे वे कितने ही अच्छे क्यों न हों, अपनाने से परहेज़ करते हैं। यदि उनमें कोई गुण है तो उसे स्वीकार करने में हमें हिचक नहीं होनी चाहिए। जहाँ तक अपने अवगुण देखने का प्रश्न है वो इसलिए कि हम अपने अवगुणों को पहचाने बिना उन्हें दूर नहीं कर सकते। क्योंकि अपने अवगुणों को दूर करना जरूरी है इसलिए उन्हें पहचानें और दूर करने का प्रयास करें। जब तक हमें अपनी कमियों का ज्ञान नहीं होगा उन्हें दूर करने का प्रयास भी हम नहीं कर सकते। हमारी समग्र उन्नति के लिए ये अनिवार्य है। इसके अभाव में हम न तो अपने आंतरिक गुणों में ही वृद्धि कर सकते हैं और न बाहरी व्यक्तित्व में ही सुधार कर उसे प्रभावशाली बना सकते हैं।

प्रायः हमें अपने बारे में गलत धारणाएँ ही होती हैं। मुझसे बड़ा कोई चिंतक या विचारक इस धरती पर पैदा हुआ होगा या आगे पैदा होगा ये बात कैसे मान लें? हम समझते हैं कि हममें तो केवल गुण ही हैं और दूसरों में अवगुण ही अवगुण। कई बार हमें अपनी क्षमताओं के विषय में भी गलत धारणाएँ ही होती हैं। हम समझते हैं कि केवल हम ही कोई कार्य विशेष कर सकते हैं अन्य कोई नहीं। यदि कोई अन्य करेगा भी तो हमारी तरह नहीं कर पाएगा। केवल हम ही कोई कार्य सर्वाधिक उत्कृष्ट तरीके से कर सकते हैं। कई बार हम समझते हैं कि हम जो कार्य कर रहे हैं वही महत्त्वपूर्ण है अन्य कोई भी नहीं जबकि वास्तविकता इससे भिन्न या कई बार विपरीत भी होती है। यही कारण है कि इससे हम न केवल अपने दोषों, कमियों अथवा अयोग्यताओं के प्रति अनभिज्ञ रह जाते हैं और उन्हें दूर नहीं कर पाते और दूसरों में कमियां निकालते हैं।

कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से दोषमुक्त हो ही नहीं सकता। यदि हम अपने आसपास या परिवार में ध्यानपूर्वक देखें तो सब में असंख्य दोष दिखलाई पड़ेंगे। यदि घर के लोगों में अधिक दोष हैं तो इसके लिए भी हम, विशेष रूप से घर के प्रमुख सदस्य ही उत्तर दायी होते हैं। प्रजा के दोषों के लिए राजा अपने उत्तरदायित्व से इंकार नहीं कर सकता। हम परस्पर एक दूसरे के आचरण से ही वास्तविक शिक्षा ग्रहण करते हैं। सद्गुण और संस्कार मोटे–मोटे ग्रंथ पढ़ने से नहीं परिवार के सदस्यां व अपने परिवेश से ही मिलते हैं यदि उनमें हैं तो।

हमारे जननायक, हमारे शिक्षक, हमारे मित्र व हमारे परिवार के सदस्य ही हमारे रोल मॉडल होते हैं। परिवार का प्रमुख भी परिवार के लिए रोल मॉडल होता है। यदि हमारे रोल मॉडल ही दोषपूर्ण हैं तो हम भी अवश्य ही उन दोषों को ग्रहण कर लेंगे। एक भ्रष्ट जननायक अथवा प्रशासक चाहे जितना भी ज़ोर लगा ले वो अपने राष्ट्र या क्षेत्र के लोगों को ईमानदार व अच्छे नागरिक को सभ्य व सुसंस्कृत नहीं बनाया जा सकता। इसके लिए भाषाण देने वाले के आचरण की शुद्धता व पवित्रता भी अनिवार्य है।

एक समझदार व जिम्मेदार व्यक्ति केवल अपने दोषों के लिए ही नहीं दूसरों के दोषों के लिए भी उत्तरदायी होता है। पूर्णतः नहीं तो आंशिक रूप से ही सही। उसे स्वदोषांधता से मुक्त होकर अपना अंतरावलोकन व मूल्यांकन कर अपने दोषों से मुक्ति पानी ही होगी। जब अपने दोषों से मुक्ति मिल जाएगी तो उनके स्थान पर अच्छी आदतों का विकास करना भी अनिवार्य है। एक अच्छा रोल मॉडल बनकर अपने देश, समाज, परिवेश व परिवार को सुधारने के लिए यह अनिवार्य है। प्रश्न उठता है कि इसकी पहल कौन करे? इस संसार को सुंदर बनाना है तो किसी न किसी को तो यह पहल करनी ही होगी। दोषों के दुष्चक्र को तोड़ना होगा। तो हम ही क्यों न करें और आज ही क्यों न करें ये पहल? वैसे परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रमुख लोगों की ये नैतिक जिम्मेदारी बनती है। उन्हें न केवल इसका अहसास होना चाहिए अपितु इस दिशा में कार्य भी करना चाहिए।

होली आयी, होली आयी

-प्रस्तुति हरीश कुमार शास्त्री

आपस का हम प्रेम बढ़ाएं,
भेदभाव सब दूर भगाएं,
जाति–पति के काले बादल,
इस धरती से दूर हटाएं,
यही सन्देश है यह लायी।
होली आयी, होली आयी।।
सुखी–समृद्ध हो जन–जीवन,
ऐश्वर्यों से पूरित भूकण,
नई सफलता, समरसता से,
आह्लादित हो मानव अभिमन,
जाग्रत जग में, ज्योति जगायी।
होली आयी, होली आयी।।
फैले धरती पर अपनापन,
विस्तृत हो शुचि प्यार अप्रमन,
दूर हटे इन महाशक्तियों का,
सब आपस का कडुवापन,
जगा रही युग की तृणायी।
होली आयी, होली आयी।।
इसके स्वागत में बसन्त नव,
हर्षित कोकिल करती कलरव,
नव आशा–अभिलाषाओं के
निकल रहे डालों पर,
यही संदेश है लायी
होली आयी, होली आयी।।

निमन्त्रण पत्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज, बुढ़ाना

१५, १६, १७ एवं १८ अप्रैल २०१६ दिवस सोमवार, मंगल, बुध, गुरूवार

आचार्य
योगेन्द्र याज्ञिक
यज्ञ के ब्रह्मा

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

एवं

भव्य संगीतमयी श्री रामकथा

पं० कुलदीप आर्य
संगीतमय
श्रीराम कथावाचक

का

कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।
आप सभी सपरिवार एवं इस्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।
अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रमानुसार पधार कर
धर्म लाभ उठायें।

निवेदकगण

अरविन्द कुमार
मंत्री, आर्य समाज, बुढ़ाना
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर

राजीव कुमार
अध्यक्ष

अरूण कुमार
कोषाध्यक्ष

संयोजक

डॉ० अरूणा त्यागी
प्रधानाचार्य आर्य कन्या इ. का.

श्री धर्मवीर सिंह
प्रधानाचार्य डी.ए.वी. इ. का.

डॉ० प्रदीप कुमार
प्राचार्य डी.ए.वी. डिग्री का.

श्रीमती रेखा त्यागी
प्रधानाचार्य डी.ए.वी. प. स्कूल

आर्य समाज शेरपुर कल्याण का 86वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

दिनांक १३, १४ एवं १५ मार्च को आर्य समाज शेरपुर कल्याण का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें अनेक विद्वानों ने भाग लिया। श्री नरेशदत्त जी, श्री कुलदीप विद्यार्थी जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी सत्यानन्द जी, मा० कल्याण सिंह जी मा० तेजपाल सिंह आर्य, विक्रम सिंह आर्य, भीष्म आर्य, बहन शुल्भा शास्त्री, स्वामी तेजानन्द, देवेन्द्र सत्यार्थी आदि विद्वानों के प्रवचन हुए, कार्यक्रम के समापन पर प्रधान बलवीर सिंह आर्य ने सबका आभार व्यक्त किया इस अवसर पर कैलाश आर्य, धर्मपाल सिंह आर्य महावीर सिंह आर्य नरेन्द्र सिंह आर्य आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

आर्य समाज सदर कैण्टोमेण्ट लखनऊ में पं० लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया गया।

दिनांक १०.०३.२०१६ को प्रातः ६ बजे आर्य समाज कैण्टोमेण्ट लखनऊ में पं० लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमें डा० सत्यकाम जी एवं आचार्य संतोष वेदालंकार जी ने उनके त्यागमय जीवन पर प्रकाश डाला कार्यक्रम समापन पर प्रधान रविन्द्र आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया इस अवसर पर नवनीत जी, सत्येन्द्र गुप्ता जी, कृष्णानन्द जी एवं नवनीत निगम जी आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

आर्य समाज बगहा मिर्जापुर व आर्य समाज रामगढ़ का 66वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बगहा मिर्जापुर व आर्य समाज रामगढ़ का ६६वाँ वार्षिकोत्सव दिन १, २, ३, ४ मार्च २०१६ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बगहा आर्य समाज में श्री विश्वव्रत शास्त्री जी के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। बगहा आर्य समाज की अध्यक्षता श्री राम लाल सिंह जी ने की और आर्य समाज रामगढ़ की अध्यक्षता श्री बेचन सिंह जी ने की महिला सम्मेलन की अध्यक्षता धर्मरक्षिता आर्या जी ने की आचार्य विश्वव्रत शास्त्री श्री रामअधार शास्त्री श्री सत्यमुनि जी, श्री जीवन सिंह जी आर्य आदि विद्वानों के प्रवचन हुए कार्यक्रम समापन पर श्री बचेन सिंह जी ने सभी विद्वानों का आभार व्यक्त किया शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम समापन हुआ।

ओ३म

महर्षि गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ०प्र०) का वार्षिक महासम्मेलन समारोह

23, 24, 25 मार्च 2019 शनिवार-रविवार-सोमवार

प्रिय महोदय,

आपके प्रिय गुरुकुल पूठ–गढ़मुक्तेश्वर का वार्षिक महासम्मेलन दिनाँक २३, २४ २५ मार्च २१६ को कुलभूमि में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। जिनमें आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, महात्मा, नेता एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप अपने इष्ट मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधार कर बच्चों को आशीर्वाद प्रदान कर धर्म लाभ उठायें।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

२१ मार्च २०१६ से श्री स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा। इसके संयोजक कुलदीप आचार्य जी रहेंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति २५ मार्च को १०.०० बजे होगी।

कार्यक्रम प्रतिदिन

प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक यज्ञ–प्रवचन–वेदारम्भ संस्कार।
मध्याह्न १ बजे से ५ बजे तक भजन–सम्मेलन।
रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक भजन–सम्मेलन।

सत्यानन्द आर्य
अध्यक्ष गुरूकुल

प्रणवानन्द सरस्वती
प्रबन्धक

आचार्य राजीव कुमार (प्राचार्य)
संयोजक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
संचालक

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में ....
....

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अंतरंग सभा 10 मार्च र[illegible] झलकियाँ

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।